सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

चिंटू चींटी और मेहनत का फल

एक बार की बात है, हरे-भरे जंगल में एक छोटी सी चींटी रहती थी, जिसका नाम था चिंटू. चिंटू बहुत मेहनती और समझदार था. वह जंगल के एक बड़े से बरगद के पेड़ के नीचे अपनी छोटी सी बिल में रहता था. चिंटू हर दिन सुबह जल्दी उठता, जंगल में खाने की तलाश करता, और अपने घर के लिए अनाज इकट्ठा करता. वह हमेशा कहता, मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है.

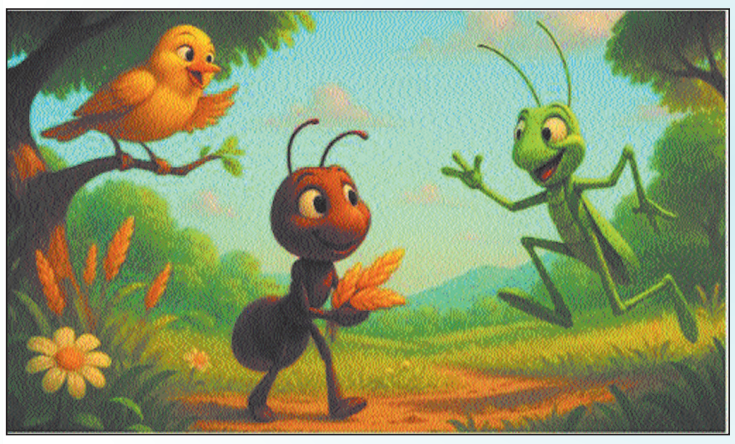

जंगल में चिंटू के कई दोस्त थे—मोटू हाथी, शेरू शेर, चीची चिड़िया, और टिंकू टिड्डा. टिंकू टिड्डा बहुत आलसी था. वह दिन भर इधर-उधर कूदता रहता और मस्ती करता. एक दिन टिंकू ने

चिंटू को अनाज इकट्ठा करते देखा और हंसते हुए कहा, अरे चिंटू, तुम सारा दिन इतनी मेहनत क्यों करते हो? देखो, मैं कितना मजा करता हूँ. कूदता हूँ, गाता हूँ, और जंगल की सैर करता हूँ. तुम भी मेरे साथ मस्ती करो ना!

चिंटू ने मुस्कुराकर कहा, टिंकू, मस्ती करना अच्छा है, लेकिन मेहनत करना भी ज़रूरी है. गर्मी का मौसम है, लेकिन बारिश का मौसम भी आएगा. उस समय खाना ढूंढना मुश्किल होगा. इसलिए मैं अभी से अनाज इकट्ठा कर रहा हूँ. टिंकू ने चिंटू की बात को अनसुना कर दिया और हंसते हुए कूदने लगा.

गर्मी का मौसम चल रहा था. जंगल में धूप बहुत तेज थी, लेकिन चिंटू अपनी मेहनत में लगा रहा. वह हर दिन जंगल में दूर-दूर तक जाता और अनाज के दाने ढूंढकर अपनी बिल में लाता. एक दिन चीची चिड़िया ने चिंटू को देखा और पूछा, चिंटू, तुम इतनी गर्मी में भी काम कर रहे हो? थोड़ा आराम कर लो ना!

चिंटू ने जवाब दिया, चीची दीदी, मैं आराम तो कर लूंगा, लेकिन अगर मैं अभी मेहनत नहीं करूंगा, तो बारिश के मौसम में मुझे भूखा रहना पड़ेगा. मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है. चीची ने चिंटू की मेहनत की तारीफ की और कहा, तुम बहुत समझदार हो, चिंटू.

दूसरी तरफ, टिंकू टिड्डा दिन भर मस्ती करता रहा. वह जंगल के पेड़ों पर कूदता, गाना गाता, और अपने दोस्तों के साथ खेलता. उसने चिंटू की सलाह को बिल्कुल भी गंभीरता से नहीं लिया.

कुछ महीनों बाद, बारिश का मौसम आ गया. जंगल में हर तरफ पानी भर गया. नदियाँ उफान पर थीं, और पेड़-पौधे बारिश में भीग रहे थे. बारिश की वजह से खाना ढूंढना बहुत मुश्किल हो गया. टिंकू टिड्डा, जो सारा दिन मस्ती करता था, अब भूख से परेशान हो गया. उसे जंगल में कहीं भी खाना नहीं मिल रहा था. टिंकू ने सोचा, अब मैं क्या करूं? मुझे तो बहुत भूख लगी है. उसे चिंटू की बात याद आई. वह दौड़ता हुआ चिंटू की बिल के पास पहुंचा और बोला, चिंटू, मुझे माफ कर दो. मैंने तुम्हारी बात नहीं मानी और सारा दिन मस्ती करता रहा. अब मुझे बहुत भूख लगी है. क्या तुम मेरी मदद कर सकते हो?

चिंटू ने टिंकू को देखा और मुस्कुराया. उसने कहा, टिंकू, मैंने गर्मी के मौसम में बहुत मेहनत की थी और अनाज इकट्ठा किया था. मेरे पास तुम्हारे लिए भी खाना है. आओ, मेरे साथ खाना खाओ. चिंटू ने टिंकू को अपनी बिल में बुलाया और उसे अनाज के दाने दिए. टिंकू ने खाना खाया और चिंटू का बहुत-बहुत धन्यवाद किया.

टिंकू की सीख और चिंटू की दोस्ती

खाना खाने के बाद टिंकू ने चिंटू से कहा, चिंटू, तुमने सही कहा था कि मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है. मैंने अपनी आलस की वजह से बहुत परेशानी झेली. अब मैं भी तुम्हारी तरह मेहनत करूंगा. चिंटू ने हंसकर कहा, कोई बात नहीं, टिंकू. गलती सबसे होती है. अब तुमने सीख लिया, तो अगली बार से मेहनत जरूर करना.

जंगल के बाकी जानवरों को भी चिंटू की मेहनत और टिंकू की गलती की बात पता चली. शेरू शेर ने चिंटू की तारीफ की और कहा, चिंटू, तुमने जंगल को एक बड़ा सबक सिखाया. मेहनत और लगन से हर मुश्किल काम आसान हो जाता है. मोटू हाथी ने भी कहा, चिंटू, तुम बहुत अच्छे दोस्त हो. तुमने टिंकू की मदद करके दोस्ती का फर्ज निभाया.

जंगल की कहानी से बच्चों को क्या सीख मिलती है?

मेहनत का महत्व- यह कहानी बच्चों को सिखाती है कि मेहनत करने से मुश्किल समय में भी परेशानी नहीं होती.

दोस्ती का फर्ज- चिंटू ने टिंकू की मदद करके दिखाया कि सच्चा दोस्त मुसीबत में साथ देता है.

गलती से सीखना- टिंकू ने अपनी आलस की गलती से सीखा और मेहनत करने का फैसला किया.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

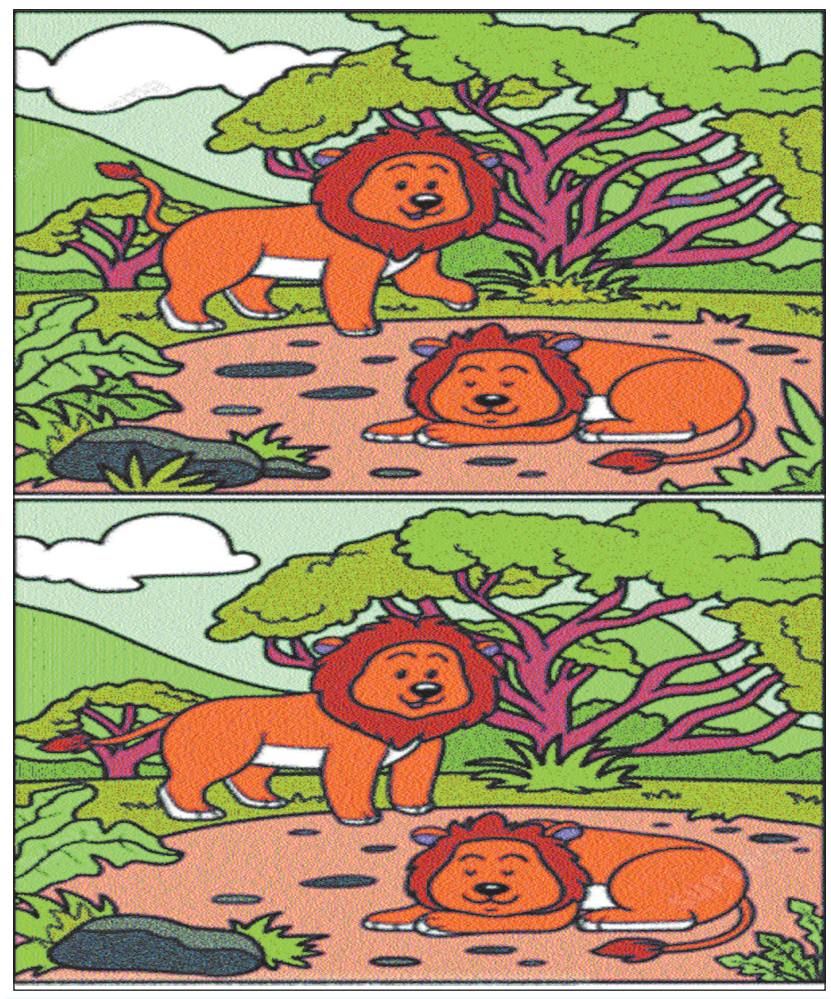

उत्तर- 1.आकाश के बादल का आकार छोटा, 2. बड़े पेड़ के नीचे लगे छोटे पौधों में अंतर, 3. खड़े हुए शेर की पूंछ में अंतर, 4. गोल पेड़ की बनी डिजाइन में फर्क, 5. नीचे रखे पत्थर के पास के पेड़ गायब, 6. सोए हुए शेर के बाजू में लगे पेड़ की डिजाइन अलग.

पंजाब केसरी लाला लाजपत राय की जीवनी

पंजाब केसरी और पंजाब के शेर से मशहूर लाला लाजपत राय भारत के महान नेताओं में से एक हैं, जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी. बेहद उम्दा आयोजक क्षमता और भाषण विषयक के तौर पर उन्होंने भारतीय युवाओं में स्वतंत्रता का ख्वाब जगाया. कानून की पढ़ाई करने वाले लाला लाजपत राय दयानन्द सरस्वती द्वारा चालू की गयी आर्य समाज के विचारों से बहुत प्रभावित थे. इन्होने अमेरिका जाकर भी भारतीय स्वतंत्रता के मुद्दे को उठाया था. उन्होंने एक लाभ निरपेक्ष वेलफेयर संस्थान पीपल सोसाइटी का निर्माण किया.

ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गरम दल के तीन प्रमुख नेताओं लाल-बाल-पाल में से एक थे. सन् 1928 में इन्होंने साइमन कमीशन के विरुद्ध एक प्रदर्शन में हिस्सा लिया, जिसके दौरान हुए लाठी-चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गये और अन्ततः 17 नवम्बर सन् 1928 को इनकी महान आत्मा ने पार्थिव देह त्याग दी.लाजपत राय के नाम से इन्होंने 28 जनवरी 1865 के दिन मुंशी राधा कृष्ण आजाद और गुलाब देवी के घर पंजाब के धुड़ीक गांव में जन्म लिया था. उनके पिता ईरानी और उर्दू भाषा के विद्वान थे. युवा राय ने अपनी शुरूआती शिक्षा रेवाड़ी के सरकारी स्कूल से प्राप्त की, जहाँ पर इनके पिता उर्दू के शिक्षक थे. इसके बाद इन्होंने कानून की डिग्री हासिल करने के लिए 1880 में लाहौर के सरकारी कॉलेज में एडमिशन लिया और अपने कॉलेज के दौरान इनकी मुलाकात भारतीय देशभक्त लाला हंस राज और पंडित गुरु दत्त से हुई.

1885 में कानून की पढ़ाई पूरी करने पर उन्होंने हिसार में प्रैक्टिस शुरू की. अपने सहकर्मियों की तरह वह वकील के तौर पर नाम नहीं कामना चाहते थे बल्कि वह समाज सेवा में अपनी जिन्दगी बिताना

चाहते थे और उसी दौरान वह दयानन्द सरस्वती के शिष्य बने, जिन्होंने आर्यसमाज का निर्माण किया. उनके साथ मिलकर लाला लाजपत राय ने दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल की शुरूआत की. स्वामी दयानन्द की मृत्यु के बाद उन्होंने अपने बाकी लोगों के साथ मिलकर एंग्लो वैदिक कॉलेज और कई और संस्थानों का निर्माण किया. अपने निष्पक्ष व्यव्हार के कारण उन्हें हिसार म्युनिसिपेलिटी के सदस्य के रूप में चुना गया और बाद में उसका सेक्रेटरी बनाया गया. 1888 में उन्होंने राजनीति में एंट्री ली और देश के स्वतंत्रता संघर्ष में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया. इलाहबाद की कांग्रेस सभा में 80 सदस्यों में से वह एक सदस्य थे जिनके भाषण ने कांग्रेस में हलचल मचा दी थी और उन्हें मशहूर कर दिया था. देश की बेहतर सेवा करने के लिए वह हिसार छोड़कर लाहौर चले गए और वहां उन्होंने पंजाब हाई कोर्ट में वकालत शुरू की. बंगाल के विभाजन में उन्होंने जोर शोर से हिस्सा लिया और स्वदेशी आंदोलन की शुरूआत की. क्रांतिकारी के रूप में उनके कामों ने लाहौर और रावलपिंडी में 1907 में कई दंगे करवाए, जिस वजह से उन्हें मांडले जेल में 6 महीनों की सजा हो गयी.

रोचक जानकारी

स्वास्थ्य और स्वाद का अद्भुत फल केला

कहा जाता है कि दो केले खाकर ऊपर से दूध पीने से दो-तीन महीने के पश्चात व्यक्ति मोटा होने लगता है. इसके अतिरिक्त, दही के साथ केले को खाने से दस्त से छुटकारा मिलता है और शहद के साथ मिलाकर खाने से दिल के दर्द में राहत मिलती है. केले के फायदे इतने अधिक हैं कि यह सभी लोगों द्वारा बेहद पसंद किया जाता है.

ऐसा कहा जाता है कि केला सर्वप्रथम मलेशिया और इंडोनेशिया में पाया गया, जिसका उल्लेख लगभग 350 ईसा पूर्व के मलेशियाई ग्रंथों में मिलता है. केले का पौधा तेजी से बढ़ता है और अच्छी फसल देता है. इसके पौधे की सुगंध और इसके पत्ते काफी आकर्षक होते हैं. यदि स्वातिका नक्षत्र में केले के ऊपर वर्षा की बूंदें पड़ जाएं, तो वह कपूर का कार्य करती हैं.

मलेशिया से यह चीन पहुंचा, जहां दूसरी शताब्दी में इसे अपनाया गया. वहीं, अमेरिका जैसे धनी और विकसित देश में केले का आगमन सोलहवीं शताब्दी में हुआ. वहां यह पहली बार में ही कौतुहल का विषय बन गया. भूमध्यसागर और प्रशांत महासागर के क्षेत्र में भी केले का अमेरिका से पहले, लगभग दसवीं शताब्दी में आगमन

हुआ. केला अपने स्वाद, पोषण और आकार के आकर्षक गुणों के कारण धीरे-धीरे अन्य देशों में फैलता गया. समय के साथ यह पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो गया और जिसने भी इसे खाया, उसका मन इसने मोह लिया. वर्तमान समय में जमैका केले के उत्पादन का मुख्य केंद्र है और यहीं से यूरोप के अधिकतर देशों को निर्यात किया जाता है. भारत में तो केला बहुत ही लोकप्रिय है. इसे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक बड़े चाव से खाते हैं. भारत में यह मुख्यतः महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और दक्षिणी भारत में अधिक पाया जाता है. कच्चे केले को गर्मी देकर पकाया जाता है, जिसे गढ़ी लगाना भी कहा जाता है. इस प्रक्रिया से यह पूरे वर्ष बाजार में उपलब्ध रहता है.

भूल भुलैया

कविता

मम्मी-पापा

मम्मी पापा कितने प्यारे
हम सबकी आँखों के तारे

हमसे कभी रहें ना दूर
मिले प्यार हमको भरपूर.

जब हम पापा के संग जाते
नये-नये पकवान खिलाते
हमें दिलाते हैं गुब्बारे
मम्मी पापा कितने प्यारे.

रोज सुनाते नई कहानी
सदा बोलना मीठी बानी

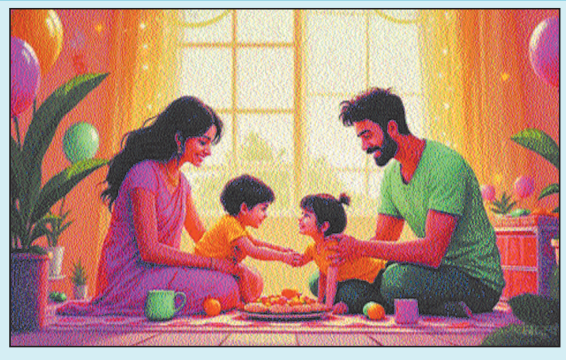

संग सदा अच्छे का करना
जिद्द करके तुम नहीं मचलना.

तभी मिलें तुमको सुख सारे
मम्मी पापा कितने प्यारे.

विज्ञान की दुनिया

इन रोचक तथ्यों के जरिए बच्चों को विज्ञान के अद्भुत रहस्यों के बारे में जानने का मौका मिलता है. यह न केवल उनकी जिज्ञासा बढ़ाता है, बल्कि विज्ञान को एक रोमांचक और मजेदार अनुभव भी बनाता है!

1. सूर्य एक मिलियन पृथ्वियों के बराबर है!

सूर्य इतना बड़ा है कि उसमें लगभग 13 लाख पृथ्वियों को समा सकते हैं! सोचिए, हमारा सूर्य कितना विशाल और शक्तिशाली है.

2. एक इंसान के शरीर में इतना कार्बन होता है 9000 पेंसिलें बनाई जा सकती हैं!

हमारे शरीर में जितना कार्बन होता है, उससे लगभग 9000 पेंसिलें बनाई जा सकती हैं. है ना मजेदार?

3. हमारा दिमाग कभी आराम नहीं करता!

जब हम सोते हैं, तब भी हमारा दिमाग लगातार काम करता रहता है. असल में, नींद के समय हमारा दिमाग और ज्यादा सक्रिय हो जाता है!

4. तितलियां अपने पैरों से स्वाद चखती हैं!

तितलियों की जीभ नहीं होती, वे अपने पैरों से स्वाद का अनुभव करती हैं. वो अपने पसंदीदा फूलों को पहचानने के लिए अपने पैरों का इस्तेमाल करती हैं!

5. शहद कभी खराब नहीं होता!

शहद ऐसा अनोखा खाद्य पदार्थ है जो कभी खराब नहीं होता. 3000 साल पुराना शहद भी खाने योग्य पाया गया है!

6. बिजली पैदा कर सकती हैं बिल्लियाँ!

बिल्लियों के फर में इतनी बिजली होती है कि अगर उन्हें सहलाया जाए, तो उनसे हल्की स्थैतिक बिजली निकल सकती है!

7. समुद्र की गहराई में चलते हैं ज्वालामुखी!

समुद्र के नीचे भी कई ज्वालामुखी होते हैं जो फूटते रहते हैं, लेकिन हमें उनकी आवाज सुनाई नहीं देती.

8. हमारे शरीर में 206 हड्डियां होती हैं, लेकिन बच्चे पैदा होते हैं 300 हड्डियों के साथ!

जब बच्चे जन्म लेते हैं, उनके शरीर में 300 हड्डियां होती हैं, जो बड़े होने के साथ जुड़कर 206 हो जाती हैं.

9. शार्क कभी सोती नहीं!

शार्क मछलियां कभी सोती नहीं हैं. वे लगातार तैरती रहती हैं, क्योंकि उन्हें जीवित रहने के लिए पानी में चलना जरूरी होता है.

बूझो तो जानें

- आप ऐसी कौन सी चीज तोड़ सकते हैं, जिसे आप कभी उठाएं या छुएं नहीं?
  उत्तर-एक वादा.
- आपका क्या नाम है लेकिन अधिकतर दूसरे लोग इसका इस्तेमाल करते हैं?
  उत्तर- आपका नाम.
- किस प्रश्न का उत्तर आप कभी भी हाँ में नहीं दे सकते?
  उत्तर-क्या आप सो रहे हैं?
- ऐसा कौन सा शेर है जो कभी दहाड़ता नहीं?
  उत्तर- डेंडिलियन.
- वह कौन सी चीज़ है जिसके पास हज़ार सुइयाँ हैं लेकिन वह सिलाई नहीं कर सकती?
  उत्तर- साही.
- मेरे बिना थैंक्सगिविंग और क्रिसमस अधूरे हैं, जब मैं टेबल पर होता हूँ तो हर कोई ज़्यादा खाना खा लेता है. मैं क्या हूँ?
  उत्तर- टर्की.

हंसी-ठिठोली

- यामुंडा- किराया हुआ हैं. ये लो 15 रुपये.
  ऑटो वाला- ये क्या, सिर्फ 15 रुपये? ये तो गलत है.
  यामुंडा- गलत कैसे? आप भी तो बैठ के आए हैं.
- यामुंडा- क्या तुझे पता है मछलियाँ बोल क्यों नहीं सकती?
  चेलाराम- पानी में मुँह डालके तुम देखो, आवाज निकलेगी क्या?
- नटखट नीटू- तुम्हारे इलाके की सड़कें इतनी खराब क्यों हैं?
  यामुंडा- नेताजी जानते हैं कि हम मेहनती लोग हैं, मुश्किल रास्तों पर चलकर ही सफलता मिलती है.
- डॉक्टर- मैं आपको गारंटी देता हूं, ऑपरेशन के बाद आप घर चलकर जाओगे.
  यामुंडा - मतलब मेरे पास रिक्शा करने के भी पैसे नहीं बचेंगे.

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें.

बिंदु मिलाओ

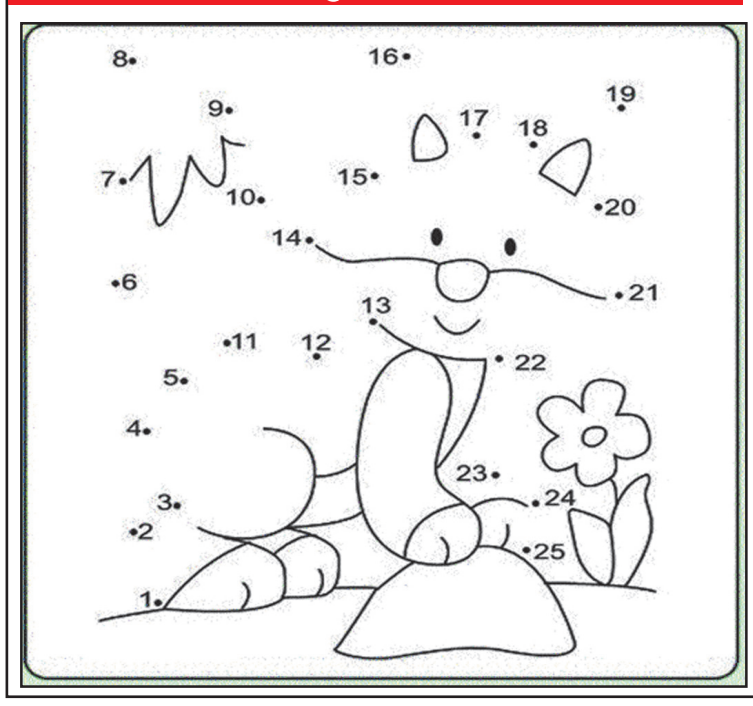

रंग भरो